जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सृष्टि का अर्थ है–दुनिया, ब्रह्माण्ड, संसार और जगत्। यह बाह्य सृष्टि कहलाती है। यह सृष्टि जड़ और चेतन से मिलकर बनी है। सृष्टि का निर्माण परमाणुओं के संयोग से हुआ है। परमाणु सबसे छोटी इकाई है। यह शाश्वत सत्य है। यह कभी नहीं नष्ट होता, किन्तु यह दिखाई नहीं देता। अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी और केवलज्ञानी ही इसे जान सकता है और देख सकता है। परमाणु चतुस्पर्शी और अष्टस्पर्शी होते हैं। चतुस्पर्शी नेत्रों से दिखाई नहीं देते। अष्टस्पर्शी नेत्र गोचर होते हैं। इसमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श होता है। इसी प्रकार चेतन तत्त्व भी है। असंख्य चेतनामय परमाणुओं को चेतना कहा जाता है। जड़ कभी चेतन नहीं बन सकता और चेतन कभी जड़ नहीं बन सकता। दोनों के गुण धर्म अलग–अलग हैं। जड़ तत्त्व टूटता–जुड़ता रहता है।

चेतन तत्त्व हमारे अन्दर विराजमान रहता है। यह सदैव एक समान रहता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं आता। किन्तु जड़ के सम्पर्क के कारण जन्म–जन्मान्तर में घूमता रहता है। जड़ और चेतन दोनों शाश्वत हैं। अलग–अलग दोनों शुद्ध हैं। दोनों शुद्ध रूप में रहते हैं। दोनों का संयोग कुदरत है। कुदरत का कानून सर्वत्र लागू होता है। सृष्टि या कुदरत ब्रह्माण्ड कहलाता है। यह सृष्टि कुदरत के अधीन है। आकाश में पक्षी स्वतंत्र होकर उड़ते हैं और सुख का अनुभव करते हैं। किन्तु जब उनको पिंजरे में बन्द कर दिया जाता है तो वह परतंत्र हो जाते हैं। पिंजरे में डालते ही वह परतंत्र हो जाता है। इसी प्रकार जीव भी स्वतंत्र है। किन्तु वह सृष्टि में आते ही परतंत्र हो जाता है। जड़ और चेतन मिश्र होकर बंधन का कार्य करते हैं। चेतना पहले है या जड़ पहले है, यह कहना बहुत कठिन है। भगवान महावीर से जब यह प्रश्न किया गया तो उन्होंने इसे पश्चानुपूर्वी बतलाया है। ये दोनों अनादि और अनन्तकाल से जुड़े हुए हैं।

दृष्टि विज्ञान में हम स्वतंत्र है। पूर्वजन्म के कर्मों के अनुरूप पुण्य और पाप की प्रप्ति होती है। सुख–दुःख पूर्व निर्धारित है। पुण्योदय से सुख और पापोदय से दुःख मिलता है। सम्यक् दर्शन मिल जाने पर सही दृष्टि और सही सोच का राजपथ मिल जाता है। दृष्टि विज्ञान रियल पुरुषार्थ है। यह सनातन सत्य देता है। दृष्टि विज्ञान स्वयं का घर है। यह किराये का मकान नहीं है। किराये के मकान में हम परतंत्र रहते हैं। स्वयं के मकान में हम स्वतंत्र हैं। स्वयं का मकान हमारी आत्मा है। यह निरपेक्ष अवस्था है।

चेतन साध्य है और जड़ पदार्थ साधन है। जड़ और चेतन के सहयोग से सृष्टि चलती है। प्रणिमात्र को, चेतन को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही सही दृष्टि, सही सोच है। जब दृष्टि सम्यक् रहती है तो सोच भी सही हो जाती है। बिना दृष्टि के सही हुए वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं हो सकता। नशे में धुत व्यक्ति को वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं हो सकता। वह मदमस्त रहता है। उसकी दृष्टि और उसकी सोच सही नहीं हो सकती। किन्तु एक सामान्य व्यक्ति सही दृष्टि और सही सोच वाला होता है। मानव को अपने समान अन्य प्राणियों के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। उसे यह महसूस करना चाहिए कि जैसे मेरा अस्तित्व है वैसे ही संसार के सभी प्राणियों का भी अस्तित्व है। यही अहिंसा बोध है। जब व्यक्ति में यह बोध आ जाता है तो उसकी दृष्टि और सोच सही हो जाती है।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि के कारण समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाता है। मानव अनेक समस्याओं को इसलिए पैदा कर लेता है कि उसे अस्तित्व बोध नहीं रहता। आज सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है। यह समस्या सही दृष्टि और सही सोच नहीं होने के कारण है। हमें वस्तुओं का उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना आवश्यक है। मानव में परिग्रह की भावना इतनी अधिक हो गयी है कि उसकी दृष्टि और सोच ही बदल गयी है। अनावश्यक रूप से पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करके पर्यावरण को प्रदूषित किया जा रहा है जिससे समस्याएं बढ़ती चली जा रही हैं। इन सब समस्याओं के पीछे मनुष्य की सोच ही कार्य कर रही है। यदि दृष्टि सही रहे तो दिशा अपने आप मिल जाती है। दिशाबोध होना आवश्यक है। यदि हम कहीं यात्रा करते हैं तो गंतव्य तक पहुंचने के लिए सही मार्ग चुनना पड़ता है। यदि

सही मार्ग नहीं पकड़ेंगे तो हम कहीं दूसरी जगह पहुंच जायेगें। इसलिए सही दृष्टि और सही सोच को होना आवश्यक है।

प्रकृति की दृष्टि में एक पौधे का जीवन भी उतना ही मूल्यवान है, जितना एक मनुष्य का है। पेड़–पौधे पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने में जितने सहायक हैं, उतने मनुष्य नहीं हैं। मनुष्य पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। वृक्षों एवं वनों के संरक्षण तथा वनस्पति के दुरुपयोग से बचने के लिए प्राचीन जैन साहित्य में अनेक निर्देश दिये गए हैं। वनों को काटना, वनों में आग लगाना आदि क्रियाओं में महापाप माना गया है, क्योंकि उसमें न केवल वनस्पति की हिंसा होती है, अपितु अन्य वन्य–जीवों की भी हिंसा होती है और पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। वन वर्षा के और पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने के अनुपम साधन है। जैनाचार्यों ने कहा व्यक्ति की इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं, वे कभी पूरी नहीं होती, उन पर नियंत्रण रखना चाहिए। यही सही दृष्टि है।